॥ श्रीः ॥

कृष्णदास प्राच्य विद्या ग्रन्थमाला

३४

शक्तिसङ्गमतन्त्रम्

छिन्नमस्ताखण्डः

(शक्तिसङ्गमतन्त्रस्य चतुर्थखण्डात्मकः)

'सुधा'-हिन्दीव्याख्योपेतः

सम्पादक एवं व्याख्याकार

डॉ० सुधाकर मालवीय

एम.ए., पीएच.डी., साहित्याचार्य

संस्कृत विभाग, कला संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

निदेशक

महामना संस्कृत अकादमी

एवं

पं० चित्तरंजन मालवीय

प्रवक्ता, महामना संस्कृत अकादमी

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

वाराणसी

योगी पुरुष परम गति को प्राप्त होता है। जैसे जल से कर प्रक्षालित होता है वैसे ही नाम स्मरण से एवं जप से **वाक्शुद्धि** होती और **'आत्मा' की शुद्धि** मन्त्र के जप से होती है। अत: मन्त्रशास्त्र का ज्ञाता साधक अपनी साधना से परब्रह्म में विलीन हो जाता है।

भारत देश में मन्त्रशास्त्र का अद्भुत भण्डार है। तन्त्र और यन्त्र पूजन से साधक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जिसके लिए वह इस संसार में मनुष्य तन में आया है। साधना से इसे ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो जाता है और आत्मा शुद्ध हो जाती है।

'शक्तिसंगमतन्त्र' तान्त्रिक साधकों के लिए अद्वितीय तान्त्रिक ग्रन्थ है। यह मौलिक तन्त्र है और शाक्तसम्प्रदाय के समस्त विषयों का साकल्येन प्रतिपादक है। यह चार खण्डों में प्रोफेसर विनतोष भट्टाचार्य के सम्पादन में १९२२ ई० से लेकर १९७८ ई० के मध्य गायकवाड ओरियन्टल सिरीज़, बड़ौदा से प्रकाशित है।

शक्तिसंगमतन्त्र अक्षोभ्य एवं महोग्रतारा (शिव-पार्वती) का संवादरूप है। इसमें चार खण्ड हैं—

१. **कालीखण्ड** (इक्कीस पटल में पूर्ण है।)
२. **ताराखण्ड** (इकहत्तर पटल में पूर्ण है।)
३. **सुन्दरीखण्ड** (इक्कीस पटल में पूर्ण है।)
४. **छिन्नमस्ताखण्ड** (ग्यारह पटल में पूर्ण है।)

सम्प्रति शक्तिसंगमतन्त्र का चौथा खण्ड **छिन्नमस्ताखण्ड** विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है। यह ग्यारह पटलों में सम्पूर्ण है। इसकी विषयवस्तु इस प्रकार है—

प्रथम पटल

विषयनिर्देश नामक इस पटल में तन्त्र का विषयनिर्देश किया गया है। दशमहाविद्या एवं षोडशमहाविद्या और इनके अङ्गमन्त्रों का वर्णन है। १. कालीविद्या के अङ्गमन्त्र, हादिमत का स्वरूप कथन, २. तारा के अङ्गमन्त्र, दिव्यसाम्राज्यभूषिता का वर्णन, चिन्तामणि के मन्त्र का विवेचन, ताराभेद का निरूपण, त्रिशक्ति विद्या, ३. छिन्नमस्ता के अङ्गमन्त्र, ४. सुन्दरी विद्या के अङ्गमन्त्र कहे गए हैं। साधना में मन्त्रषट्क का विधान, ५. वगला के अङ्गमन्त्र, ६. महालक्ष्मी के अङ्गदेवता, ७. मातङ्गी के अङ्गमन्त्र, ८. भुवना के अङ्गमन्त्र, ९. सिद्धविद्या भैरवी विद्या के अङ्गमन्त्र, ९. भैरव के अङ्गमन्त्र, १०. धूमावती के अङ्गमन्त्र प्रतिपादित हैं। फिर पञ्चायतन पक्ष में उनके अङ्ग एवं द्वारदेवता तथा मन्त्र का विवेचन है। अन्त में गुह्यकाली का विशेष कथन है।

द्वितीय पटल

विद्यापीठ निर्णय नामक इस पटल में विद्यापीठ निर्णय का प्रतिपादन है। पूर्णदीक्षा विधि में अधिकार, तारा और काली के क्रम से पीठ का निर्णय एवं

पर्यायनिर्णय कहा गया है । इसके पश्चात् १. कादिमत के प्रदेश तथा २. हादिमत के प्रदेश कहे गए हैं ।

१. देशपर्याय, २. कालपर्याय, ३. आम्नायाख्यपर्याय, ४. विद्यापर्याय, ५. दर्शनाख्यपर्याय, ६. आयतनपर्याय, ७. आगमपर्याय का विवेचन हैं । राजयोग कथन, सप्तविधा वेश्याकथन, शक्तियोग के काठिन्य का विवेचन, साधक के शक्ति स्वभाव का कथन, शक्तियोग, दिव्यपीठ, कुमारी पूजन का माहात्म्य, महाराज्य का फल, वेश्यातोषण का फल और अष्टाष्टक विधान वर्णित हैं । महाशक्ति का नामकरण, विकारहीनता के लिए कुमारी पूजन और वर्षक्रम से कुमारी के स्वरूप का विवेचन हैं । इन्द्रियनिग्रह की आवश्यकता, सिद्धिसोपान, शक्ति रूप की श्रेष्ठता, शक्ति स्वरूप भेद, शिव का स्वरूप और काली का रूप विवेचित हैं । अन्त मे शक्ति सालोक्य मुक्ति एवं तारा रूप की प्राप्ति के योग का प्रतिपादन किया गया हैं ।

तृतीय पटल

चक्षुषा शक्तिसमाराधन नामक इस पटल में चक्षु के द्वारा शक्ति की आराधना वर्णित हैं । तर्पण रूपा पुरश्चर्या का विधान, मार्जन रूपा पुरश्चर्या का विधान और पूजा रूपा पुरश्चर्या का विधान हैं । फिर ब्रह्मानन्द शब्द का अर्थ कहने के बाद महा तप के फल का कथन हैं । परात्पर संयोग का दुर्लभत्व कथन, नर रूप परात्परत्व कथन, ज्ञानामृतत्व कथन और राज्यपीठाधीश्वर की चर्या का वर्णन हैं । लोक में वेश्या से आढ्य व्यक्तियों के सांख्यत्व का वर्णन एवं त्रैलोक्याकर्षण प्रयोग कहा गया हैं । कविताकारित्व सिद्धि कथन, प्रयोग द्वारा भाग्यरेखान्तरत्व का विधान प्रतिपादित कर, सर्वैश्वर्यत्व प्रयोग का कथन हैं । स्त्रियों का आकर्षण प्रयोग कहकर सर्ववाक्सिद्धिकारकत्व प्रयोग एवं रोगनष्टकारक प्रयोग वर्णित हैं । अन्त में त्रैलोक्यविजयार्थ प्रयोग, सर्वसिद्धीश्वरत्व प्रयोग, सर्ववाञ्छामयी सिद्धि प्राप्ति प्रयोग तथा राज्यलक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग प्रतिपादित हैं ।

चतुर्थ पटल

पुष्प निर्णय-अनुकल्पविधि नामक इस पटल में पूजार्थ पुष्प का निर्णय और अनुकल्प की विधि वर्णित हैं । दिवाक्रम कथन, रात्रिक्रम कथन, विद्यात्मिका कथन, विद्या का नाम तथा दशविद्यादि क्रम से साधनान्तरकथन, त्रैलोक्याधिपतित्व प्रयोग कथन, राजराजेश्वरत्व प्रयोग कथन और दशविद्याधिपत्व प्रयोग का निरूपण हैं । पुष्पादि का निर्णय कर पूजा योग्य पुष्प एवं पत्रों का विधान और अनुकल्प विधि कह कर सात्त्विक वलि कथन तथा गर्भान्तक योग प्रतिपादित हैं ।

पञ्चम पटल

विशेष पुष्प पटल नामक इस पटल में १. रतिपुष्पकथन, २. कामपुष्प कथन, ३. देवपुष्प कथन है और कामपुष्प एवं देवपुष्प के वर्ण का विवेचन है । करवीर पुष्प के

भेद, नवरत्न भेद से चूडामणि के भेद, केतकी पुष्प के भेद, मालती पुष्प के भेद, पुष्पों के लोक का कथन और पुष्प के विषये में विशेष कथन किया गया है।

पूजाविधि में प्रशस्त पुष्प कथन, वर्ज्य पुष्प कथन, देशपर्याय भेद से विशेष कथन, १. केरल सम्प्रदाय सीमा कथन, २. काश्मीराख्य सम्प्रदाय सीमा कथन, ३. गौड सम्प्रदाय सीमा कथन, ४. विलासाख्य सम्प्रदाय सीमा कथन, त्रिविध मार्ग कथन, देशपर्याय भेद से तन्त्रों की संख्या, संहिता कथन और आम्नाय में देशाख्य पर्याय का विवेचन है। शाक्त क्रम से निष्कल भेद निरूपण, शैवक्रम से देवता कथन, कालपर्याय साधक कथन, सामरस्य दर्शन कथन, महासाम्राज्य सुन्दर रूप कथन और कृष्णांशत: शृङ्गार का विधान है।

शिवशक्त्यात्मक सृष्टि कथन, काली हादि रूपत्व कथन, महाकामकला का वर्णन एवं ब्रह्मरूपा निर्गुणा भगवती के स्वरूप का वर्णन है। इसी प्रकार सुन्दरी का समुद्भव, मोहरात्रि समुद्भवा विद्या का कथन, प्रपञ्चेशी विद्या, श्रीषोडशीविद्या का निरूपण किया गया है। १. श्रीविद्योत्पत्ति कथन, २. श्रीत्रिपुराम्बिका की उत्पत्ति, ३. उग्रतारा विद्या की उत्पत्ति, ४. श्रीतारा विद्या की उत्पत्ति तथा ५. महोग्रताराविद्या की उत्पत्ति का विधान किया गया है। तत्पश्चात् विष्ण्वादि देवोत्पत्ति, ब्रह्मदेवोत्पत्ति, रुद्रोत्पत्ति, नीलसरस्वती का वर्णन, अक्षोभ्य ऋषि का प्राकट्य, 'महोग्रतारा' का प्राकट्य, छिन्नमस्ता की उत्पत्ति, चण्डिका की उत्पत्ति तथा डाकिनी-वर्णिनी प्राकट्यकथन और वीररात्रिदिन में परमाकला की उत्पत्ति का विवेचन है।

षष्ठ पटल

कालपर्यायनिरूपण नामक इस पटल में काल पर्याय का निरूपण है। 'वीररात्रि' कथन, स्तम्भनाख्य बाणोत्पत्ति कथन, शिवरात्रिकथन, राजमातङ्गिनी विद्योत्पत्ति कथन, भुवना विद्योत्पत्ति कथन, तारिणीकलोत्पत्ति कथन, महामातङ्गिनी कलोत्पत्ति विवेचन है और 'महालक्ष्मी' का प्राकट्य, धूमावती का प्राकट्य, मातङ्ग्युत्पत्ति का कारण, उच्छिष्टकन्योत्पत्ति, 'उच्छिष्टमातङ्गिनी' का प्राकट्य, गणेशोत्पत्ति, महाकाल की उत्पत्ति, वटुकोत्पत्ति, दत्तोत्पत्ति, चिदम्बनोत्पत्ति, जयन्त्यादि देवियों की उत्पत्ति की तिथि का विवेचन किया गया है। १. मत्स्यावतारोत्पत्ति, २. कूर्मावतारोत्पत्ति, ३. वराहावतारोत्पत्ति, ४. नृसिंहावतारोत्पत्ति, ५. वामनावतारोत्पत्ति, ६. परशुरामावतारोत्पत्ति, ७. रामावतारोत्पत्ति, ८. कृष्णावतारोत्पत्ति, ९. बुद्धावतारोत्पत्ति एवं १०. कल्किरूप के अवतार की उत्पत्ति की तिथि का विधान कहा गया है। पूजाप्रयोग में प्रशस्त तिथिकथन, पूजाविधि में मार्ग कथन, षडाम्नाय में मार्ग कथन, शैव एवं वैष्णव आदि सम्प्रदाय में मार्गकथन, षडाम्नाय क्रम से शकुन विचार बताया गया है। और १. शाक्तसम्प्रदाय में कालपर्याय मार्ग से तन्त्रों की संख्या, २. शैवसम्प्रदाय मे तन्त्रों की संख्या, ३. वैष्णव सम्प्रदाय में तन्त्रों की संख्या, ४. सौर सम्प्रदाय में तन्त्रों की संख्या एवं ५. गाणपत्य सम्प्रदाय में तन्त्रों की संख्या विवेचित है।

सप्तम पटल

पर्यायाम्नायादिनिर्णयकथन नामक इस पटल में पर्याय एवं आम्नायादि का निर्णय किया गया है।

बटुकमत में षडाम्नाय देवता का विधान किया गया है, जिसके अन्तर्गत १. पूर्वाम्नाय के देवता, २. दक्षिणाम्नाय के देवता, ३. पश्चिमाम्नाय के देवता, ४. उत्तराम्नाय के देवता, ५. ऊर्ध्वाम्नाय के देवता एवं ६. पातालाम्नाय के देवता का वर्णन है।

महामूर्तिमत में षडाम्नाय देवता का विधान—१. पूर्वाम्नाय देवता कथन, २. दक्षिणाम्नाय देवता कथन, ३. पश्चिमाम्नाय देवता कथन, ४. उत्तराम्नाय देवता कथन, ५. ऊर्ध्वाम्नाय देवता कथन और ६. पातालाम्नाय के देवता का कथन है।

महामूर्तिमत में आम्नाय के तन्त्रों की संख्या कही गई है। १. पूर्वाम्नाय में तन्त्रों की संख्या, २. दक्षिणाम्नाय में तन्त्र संख्या, **समयाम्नायमत** में षडाम्नाय के तन्त्रों की संख्या और ६. पातालाम्नाय में तन्त्र संख्या कही गई है।

महानिष्कल दर्शन आम्नाय, **कादिमत** में दर्शन का अभिधान, दिव्याम्नाय देवता का कथन, (क) विद्याम्नाय देवता, कादिमत में देवता कथन, विद्याम्नाय कथन, (ख) सिद्धाम्नाय कथन, (ग) दिव्याम्नाय कथन, (घ) रत्नाम्नाय विधान, (ङ) देशागमाख्य तन्त्रों का विवेचन और (च) मण्डलाम्नाय आदि का विवेचन किया गया है।

१. मण्डलाम्नाय में पूर्वाम्नाय के देवता का विधान, २. दक्षिणाम्नाय में देवता, ३. पश्चिमाम्नाय के देवता, ४. उत्तराम्नाय के देवता, ५. ऊर्ध्वाम्नाय के देवता का विधान एवं ६. पातालाम्नाय के देवता का निरूपण है। इस क्रम में (छ) पञ्चकृत्याम्नायरूप का कथन, (ज) कालिकाम्नाय पर्याय का कथन, (झ) पर्याय आगमरूप का कथन तथा (ञ) बटुकाम्नाय का विवेचन है।

अष्टम पटल

यन्त्रप्रस्तारादिनिर्णयकथन नामक इस पटल में यन्त्र प्रस्तारादि के निर्णय का विवेचन है। निर्गुण ब्रह्म कथन, सगुण ब्रह्म कथन, महाशक्ति के स्वरूप का कथन, महाशक्ति दर्शन, शक्ति से सृष्टि की उत्पत्ति और **महामत** का विवेचन किया गया है। फिर उग्रतारा की निरुक्ति, सम्प्रदाय भेद से विद्याओं के नामों का निरूपण, नाडी त्रितयरूपिणी शक्ति, ब्रह्मतारा के अभ्यास का विधान, नादोत्पत्ति, परकायप्रवेश, और ब्रह्मविद्या के स्वरूप का निरूपण है।

१. पूर्वाम्नाय में सृष्टिरूप मन्त्रयोग कथन, २. दक्षिणाम्नाय में स्थितिरूप भक्तियोग का कथन, ३. पश्चिमाम्नाय में संहाररूप कर्मयोग का कथन, ४. उत्तराम्नाय में मन्त्रषट्करूप ज्ञानयोग का कथन, ५. ऊर्ध्वाम्नाय में अनुग्रहरूप स्वाराज्ययोग का

निरूपण और ६. पातालाम्नाय में त्रैलोक्य उत्पत्तिरूप सम्भोगयोग का विवेचन किया गया है। प्रकाशनयोग्य आम्नाय, पञ्चप्रेतावतार कथन, धर्म की स्थापना हेतु शङ्करावतार कथन, दक्षिणामूर्तिरूप शिवावतार कथन, सकल निष्कल कथन और दिव्यसाम्राज्य दीक्षाक्रम का विधान कहा गया है। १. पूर्वाम्नाय में सृष्टिरूप मन्त्रयोग कथन, भोगवार सम्प्रदाय कथन, २. दक्षिणाम्नाय में 'स्थिति'रूप भक्तियोग का विवेचन, ३. पश्चिमाम्नाय में 'संहार'रूप कर्मयोग, ४. उत्तराम्नाय में (मन्त्रषट्क रूप) ज्ञानयोग, ५. ऊर्ध्वाम्नाय में प्रकाशरूप अणिमाष्टक योगवित्, दिव्यौघ सम्प्रदाय, ज्ञान काण्ड आदि पाँच काण्डों का निरूपण, ज्ञानयोग आदि पञ्चयोग निरूपण, भावक्रिया क्रम से द्विधा मन्त्रयोग विधान और सन्यासाश्रम कथन है। न्यासभेद कथन, कलहट्टादि प्रदेश कथन, दक्षिणामूर्ति सम्मत अवतार परम्परा का विवेचन, निर्गुणाख्योपासना विधान, श्रीचक्रप्रस्तारभेद कथन, पूजन में प्रशस्त श्रीचक्र का रचना क्रम, **दक्षिणामूर्ति मत** में श्रीचक्ररचनाक्रम, **आनन्दभैरवमत** में श्रीचक्र निर्माण का विधान किया गया है और कादिप्रस्तार एवं भूप्रस्तार का भेद निरूपण कहा गया है। बीजहीन यन्त्र का चैतन्य रहितत्व, **आनन्दभैरवमत** में प्रस्तारकथन, **दक्षिणामूर्तिमत** में भूप्रस्तारादि विधान, **विरूपाक्षमत** में भूप्रस्तारादि विधान, **बटुकमत** में प्रस्तार के तादात्म्य का विवेचन, काली देवी के यन्त्र का निरूपण तथा प्रकारान्तर एवं यन्त्रान्तर से कालीयन्त्र कथन, श्रीदक्षिणाकाली के यन्त्र का विधान, मतभेद से बीजों का निर्णय एवं विन्दुस्वरूप का विवेचन किया गया है। **महाकालमत** में ध्यान, **अतिकालमत** में ध्यान, तारायन्त्ररहस्य कथन, श्रीमहातारिणी यन्त्रकथन, श्रीतारिणी यन्त्र कथन, **गन्धर्वेशमत** में तारिणी यन्त्र कथन, पुंयोगर्थ विद्या का साधन, देवता पूजन, महाविद्या सिद्धि एवं यक्षिणी सिद्धि का विवेचन है।

नवम पटल

मालाभेद निरूपण नामक इस पटल में माला के भेदों का प्रतिपादन है। यहाँ दैत्यों के संहारणार्थ काली रूप कथन, कालिका विद्या भेद कथन, कालिकांश से विद्योत्पत्ति कथन तथा गणेश का द्वितय रूप कथन और शिवशक्त्यात्मक ब्रह्म का निरूपण है। यहाँ हरिहरात्मक स्वरूप का विधान, अर्धनारीश्वर स्वरूप कथन, गौरी एवं लक्ष्मी का व्यत्यय कथन, शिव-रामात्मक ध्यान कथन, पुरश्चरण कथन और ध्यान शृङ्खला का निरूपण है।

नाडीगत वायु भेद से कुण्डलिनी की गति का वर्णन, विज्ञान प्राप्ति कथन, विज्ञान की प्रथम भूमिका एवं विज्ञान की मुख्य भूमिका कथन, मेधादीक्षा प्राप्ति कथन, ब्रह्मरूपत्व कथन, क्षुद्रानन्द कथन, ब्रह्मानन्द कथन, महाकुण्डलिनी स्वरूप कथन, स्वयम्भू लिङ्ग का स्वरूप कथन, मूलाधार का स्थान और चन्द्र संज्ञक कटाह एवं सप्तदशी कला का विवेचन है।

मालाभेद का विवेचन कर १. शक्तिमाला, २. वैष्णवीमाला, ३. शिवामाला,

४. गायत्रीमाला, ५. बटुकाभिधामाला, ६. चीनमाला, ७. क्षेत्रपालजामाला, ८. गन्धर्वमाला, ९. वटवासिनीमाला, १०. मञ्जुघोषमाला, ११. खेचरीमाला, १२. शाम्भवीमाला, १३. वारुणीमाला, १४. यक्षिणीमाला, १५. किन्नरीमाला, १६. जैनमाला और १७. चान्द्रीमाला आदि का कथन तथा अन्त में आधिक्यायुध की व्यवस्था का प्रतिपादन है ।

दशम पटल

सामान्य भाषा विवरण नामक इस पटल में सामान्य भाषा (पूजा) का विवेचन है । शय्या पर गुरु का ध्यान, जपसमर्पण की विधि, माला के भेद, 'कुल्लुका' शब्द का निर्वचन, कुल्लुका के जप से हीन साधक की गति, कुल्लुका देवी का स्थान और अन्तर्मातृका विधान वर्णित हैं ।

१. केरल सम्प्रदाय में न्यास विधान, २. काश्मीर सम्प्रदाय में न्यासविधि, ३. गौड क्रम में न्यासविधि, जपान्तिक विधि, वैष्णव आदि आगम मत का विधान, भूतशुद्धि की विधि, कुण्डली के उत्थापन मन्त्र का विधान, स्त्री-पुंभेद निरूपण, षट्शाम्भव क्रम में कालिका साधन, त्रिविध षट्कर्म का निरूपण, सिद्धिप्रत्यय कथन, नित्यास्वरूप कथन, तर्पण की विधि, मार्गत्रय के क्रम से षडङ्गन्यास विधान, विधिरहित के लिए हृदयादि न्यास का फल, सांख्यायन द्वारा कहे गए हृदयादि न्यास एवं मुद्रा, पीठरहस्य, पीठद्वयकथन, छिन्नामस्ता में यथायोग पीठकथन, पूजोपचार विधान, और पीठचतुष्टय का विवेचन है । विष्टर पद्म की विधि, सदाशिव रूप विष्टर कथन तथा अन्त में अनुक्ता गायत्री एवं उसके क्रम विधान का वर्णन किया गया है ।

एकादश पटल

पुष्प-होम-ब्रह्मजात्यादिनिरूपण नामक इस पटल में देवता के लिए पुष्प होम एवं ब्रह्मजात्यादि का निरूपण किया गया है । स्त्रीदीक्षा की विधि, स्त्रियों के लिए मार्ग, सर्वकामदा दीक्षा, पुष्पभेद से आहुति का विधान, पर्युषित पुष्प विवेचन, नारद (पाञ्चरात्र) मत में विशेष कथन, महत्तरहोम विधान, विषमाख्य क्रम से होम कथन, दशविध पञ्चामृत कथन, विषमाख्य होम कर्म का निरूपण, सप्तशती का होम विधान, अन्तःपूजा का श्रेष्ठत्व और भावयोगी का निरूपण है । फिर शावर मन्त्र का साधनकाल एवं भाषा का साधनकाल कहा गया है । इसके साथ ही १. नपुंसाष्टक, २. बन्ध्याष्टक एवं ३. अपस्माराष्टक का भी विवेचन किया गया है ।

प्रस्तुत संस्करण का मूल पाठ गायकवाड ओरियन्टल सीरीज नं. १६६ पर आधृत है । यह संस्करण प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी के सम्पादकत्व में १९७८ में मुद्रित हुआ था । प्रो. द्विवेदीजी ने चारों भागों की विशिष्ट शब्दों की सूची भी बनाई थी । उसे अविकल रूप से यहाँ मुद्रित किया गया है । इसके लिए मैं प्रो. द्विवेदीजी का हृदय से आभारी हूँ ।

प्रस्तुत संस्करण के अन्त में सम्पूर्ण छिन्नमस्ता ग्रन्थ की श्लोकार्धानुक्रमणिका सर्वप्रथम प्रस्तुत की गई है । अन्त में एक पारिभाषिक कोश भी दिया गया है जो

विषयानुक्रमणिका

प्रथमः पटलः १-१६
विषयनिर्देशकथनम्

दशमहाविद्याकथनम् २
षोडशमहाविद्याकथनम् २
एतासामङ्गमन्त्राः ३
१. कालीविद्याङ्गमन्त्राः ३
हादिमताख्यस्य स्वरूपकथनम् ४
२. ताराङ्गमन्त्राः ५
दिव्यसाम्राज्यभूषिताकथनम् ६
चिन्तामणिमन्त्रकथनम् ६
ताराभेदनिरूपणम् ६
त्रिशक्तिविद्याकथनम् ७
३. छिन्नाङ्गमन्त्रकथनम् ८
४. सुन्दरीविद्याङ्गमन्त्राः ९
साधनायां मन्त्रषट्ककथनम् १०
५. वगलाङ्गमन्त्राः ११
६. महालक्ष्म्याङ्गदेवताकथनम् ११
७. मातङ्ग्याङ्गमन्त्राः १२
८. भुवनाङ्गमन्त्राः १२
९. सिद्धविद्याभैरवीविद्याङ्गमन्त्राः १२
९. भैरव्याङ्गमन्त्राः १३
१०. धूमावत्यङ्गमन्त्राः १३
पञ्चायतनपक्षे तदङ्गद्वारदेवता-
मन्त्रकथनम् १४
गुह्यकाल्यां विशेषकथनम् १५
(श्लोक संख्या १०९)

द्वितीयः पटलः १७-३५
विद्यापीठनिर्णयकथनम्

पूर्णदीक्षाविधौ अधिकारविधानम् १७
ताराकालीक्रमेण पीठनिर्णयकथनम् १८
पर्यायनिर्णयकथनम् १९
१. कादिमतस्य प्रदेशाः २०
२. हादिमतस्य प्रदेशाः २०
१. देशपर्यायकथनम् २२
२. कालपर्यायकथनम् २२
३. आम्नायाख्यपर्यायकथनम् २२
४. विद्यापर्यायकथनम् २२
५. दर्शनाख्यपर्यायकथनम् २३
६. आयतनपर्यायकथनम् २३
७. आगमपर्यायकथनम् २३
राजयोगकथनम् २४
सप्तविधा वेश्याकथनम् २६
शक्तियोगस्य काठिन्यकथनम् २७
साधकस्य शक्तिस्वभावकथनम् २७
शक्तियोगकथनम् २८
दिव्यपीठकथनम् २८
कुमारीपूजनस्य माहात्म्यकथनम् २८
महाराज्यफलकथनम् २९
वेश्यातोषणफलकथनम् २९
अष्टाष्टककथनम् ३०
महाशक्तिनामकरणकथनम् ३०
अविकारसिद्ध्यर्थं कुमारीपूजनम् ३१

वर्षक्रमेण कुमारीरूपकथनम् ३१
इन्द्रियनिग्रहस्यावश्यकताकथनम् ३२
सिद्धिसोपानकथनम् ३२
शक्तिरूपस्य श्रेष्ठताकथनम् ३३
शक्तिस्वरूपभेदकथनम् ३३
शिवस्य स्वरूपकथनम् ३३
कालीरूपकथनम् ३४
शक्तिसालोक्यमुक्तिकथनम् ३४
तारारूपाप्तये योगकथनम् ३४
(श्लोक संख्या ११५)

तृतीयः पटलः ३६-६६
चक्षुषा शक्तिसमाराधनकथनम्

तर्पणरूपा पुरश्चर्याविधानम् ४५
मार्जनरूपा पुरश्चर्याविधानम् ४५
पूजारूपा पुरश्चर्याविधानम् ४५
ब्रह्मानन्दशब्दार्थकथनम् ५३
महातपस्य फलकथनम् ५३
परात्परसंयोगस्य दुर्लभत्वकथनम् ५५
नररूपपरात्परत्वकथनम् ५५
ज्ञानामृतत्वकथनम् ५५
राज्यपीठाधीश्वरस्य चर्यावर्णनम् ५७
लोके वेश्यावतां सौख्यत्व-कथनम् ५८
प्रयोगान्तरकथनम् ५९
प्रयोगान्तरकथनम् ६०
त्रैलोक्याकर्षणप्रयोगकथनम् ६१
कविताकारित्वसिद्धिकथनम् ६१
प्रयोगेण भाग्यरेखान्तरत्वविधानम् ६२
सर्वैश्वर्यत्वप्रयोगकथनम् ६२
स्त्रीणामाकर्षण प्रयोगकथनम् ६२
सर्ववाक्सिद्धिकारकत्व प्रयोग-कथनम् ६३
रोगनष्टकारकप्रयोगकथनम् ६३
त्रैलोक्यविजयार्थ प्रयोगकथनम् ६४
सर्वसिद्धीश्वरत्वप्रयोगकथनम् ६४
सर्ववाञ्छामयीसिद्धिप्राप्ति-प्रयोगकथनम् ६५
राज्यलक्ष्मीप्राप्तिप्रयोगकथनम् ६५
(श्लोक संख्या २१४)

चतुर्थः पटलः ६७-८४
पुष्पनिर्णयम्-अनुकल्पविधिकथनम्

दिवाक्रमकथनम् ६९
रात्रिक्रमकथनम् ६९
विद्यात्मिकानामकथनम् ७०
विद्यानामकथनम् ७०
दशविद्यादिक्रमेण साधनान्तर-कथनम् ७३
त्रैलोक्याधिपतित्वप्रयोगकथनम् ७४
राजराजेश्वरत्वप्रयोगकथनम् ७४
दशविद्याधिपत्वप्रयोगनिरूपणम् ७४
पुष्पादिनिर्णयकथनम् ७६
पूजायोग्यपुष्पपत्राणि ७७
अनुकल्पविधिकथनम् ८१
सात्त्विकबलिकथनम् ८१
गर्भान्तिकयोगविधानम् ८२
(श्लोक संख्या १३०)

पञ्चमः पटलः ८५-१११
विशेषपुष्पपटलकथनम्

१. रतिपुष्पकथनम् ८६
२. कामपुष्पकथनम् ८६
३. देवपुष्पकथनम् ८६
कामपुष्प-देवपुष्पवर्णकथनम् ८६
करवीरपुष्पभेदकथनम् ८७
नवरत्नप्रभेदतः चूडामणिभेद-कथनम् ८७
केतकीपुष्पभेदकथनम् ८७
मालतीभेदकथनम् ८८
पुष्पस्य लोककथनम् ८८
पुष्पविषये विशेषकथनम् ८९

पूजाविधौ प्रशस्तपुष्पकथनम् ९०
वर्ज्यपुष्पकथनम् ९०
देशपर्यायभेदेन विशेषकथनम् ९१
१. केरलसम्प्रदायसीमाकथनम् ९२
२. काश्मीराख्यसम्प्रदायसीमा-कथनम् ९२
३. गौडसम्प्रदायसीमाकथनम् ९२
४. विलासाख्यसम्प्रदायसीमा-कथनम् ९२
त्रिविधमार्गकथनम् ९२
देशपर्यायभेदेन तन्त्राणां संख्या ९३
संहिताकथनम् ९४
आम्नाये देशाख्यपर्यायकथनम् ९४
शाक्तक्रमेण निष्कलभेदनिरूपणम् ९५
शैवक्रमेण देवताकथनम् ९५
कालपर्यायसाधककथनम् ९६
सामरस्यदर्शनकथनम् ९७
महासाम्राज्यसुन्दररूपकथनम् ९९
कृष्णांशत: शृङ्गारविधानम् ९९
शिवशक्त्यात्मक सृष्टिकथनम् १००
काल्या: हादिरूपत्वकथनम् १००
महाकामकलावर्णनम् १०१
ब्रह्मरूपा निर्गुणा भगवतीस्वरूप वर्णनम् १०२
सुन्दरीसमुद्भववर्णनम् १०२
मोहरात्रिसमुद्भवा विद्याकथनम् १०३
प्रपञ्चेशीविद्याकथनम् १०३
श्रीषोडशीविद्यानिरूपणम् १०३
१. श्रीविद्योत्पत्तिकथनम् १०४
२. श्रीत्रिपुराम्बिकोत्पत्तिकथनम् १०४
३. उग्रताराविद्योत्पत्तिकथनम् १०४
४. श्रीताराविद्योत्पत्तिकथनम् १०४
५. महोग्रताराविद्योत्पत्तिकथनम् १०५
१. विष्ण्वादिदेवोत्पत्तिकथनम् १०५
ब्रह्मदेवोत्पत्तिकथनम् १०५
३. रुद्रोत्पत्तिकथनम् १०५
नीलसरस्वतीवर्णनम् १०६
अक्षोभ्य ऋषि प्राकट्यकथनम् १०६
'महोग्रतारा' प्राकट्यकथनम् १०७
छिन्नोत्पत्तिकथनम् १०७
चण्डिकोत्पत्तिकथनम् १०८
डाकिनी-वर्णिनी प्राकट्यकथनम् १०८
वीररात्रिदिने परमाकलोत्पत्तिकथनम् ११०
(श्लोक संख्या १७३)

षष्ठ: पटल: ११२-१३०

कालपर्यायनिरूपणम्

'वीररात्रि' कथनम् ११३
स्तम्भनाख्य बाणोत्पत्ति कथनम् ११३
शिवरात्रिकथनम् ११३
राजमातङ्गिनी विद्योत्पत्तिकथनम् ११४
भुवना विद्योत्पत्तिकथनम् ११४
तारिणीकलोत्पत्तिकथनम् ११४
महामातङ्गिनीकलोत्पत्तिकथनम् ११५
'महालक्ष्मी' प्राकट्यकथनम् ११५
धूमावतीप्राकट्यकथनम् ११५
मातङ्ग्युत्पत्तिकारणकथनम् ११६
उच्छिष्टकन्योत्पत्तिकथनम् ११७
'उच्छिष्टमातङ्गिनी' प्राकट्य-कथनम् ११७
गणेशोत्पत्तिकथनम् ११८
महाकालोत्पत्तिकथनम् ११८
बटुकोत्पत्तिकथनम् ११८
दत्तोत्पत्तिकथनम् ११८
चिदम्बनोत्पत्तिकथनम् ११८
जयन्त्याद्युत्पत्तितिथिकथनम् ११८
१. मत्स्यावतारोत्पत्तिकथनम् ११९
२. कूर्मावतारोत्पत्तिकथनम् ११९
३. वराहावतारोत्पत्तिकथनम् १२०
४. नृसिंहावतारोत्पत्तिकथनम् १२०
५. वामनावतारोत्पत्तिकथनम् १२०
६. परशुरामावतारोत्पत्तिकथनम् १२१

७. रामावतारोत्पत्तिकथनम् १२१
८. कृष्णावतारोत्पत्तिकथनम् १२१
९. बुद्धावतारोत्पत्तिकथनम् १२१
१०. कल्किरूपावतारोत्पत्ति-
कथनम् १२२
पूजाप्रयोगे प्रशस्ततिथिकथनम् १२२
पूजाविधौ मार्गकथनम् १२३
षडाम्नाये मार्गकथनम् १२४
शैववैष्णवादिसम्प्रदाये मार्गकथनम् १२४
षडाम्नायक्रमेण शकुनकथनम् १२५
१. शाक्तसम्प्रदाये कालपर्यायमार्गे
तन्त्राणां संख्याकथनम् १२६
२. शैवसम्प्रदाये तन्त्राणां संख्या-
कथनम् १२७
३. वैष्णवसम्प्रदाये तन्त्राणां संख्या-
कथनम् १२८
४. सौरसम्प्रदाये तन्त्राणां संख्या-
कथनम् १२८
५. गाणपत्यसम्प्रदाये तन्त्राणां
संख्याकथनम् १२९
(श्लोक संख्या १२२)

सप्तमः पटलः १३१-१५४
पर्यायाम्नायादिनिर्णयकथनम्

बटुकमते षडाम्नायदेवताविधानम् १३१
१. पूर्वाम्नायदेवताकथनम् १३१
२. दक्षिणाम्नायदेवताकथनम् १३२
३. पश्चिमाम्नायदेवताकथनम् १३२
४. उत्तराम्नायदेवताकथनम् १३२
५. ऊर्ध्वाम्नायदेवताकथनम् १३३
६. पातालाम्नायदेवताकथनम् १३३
महामूर्तिमते षडाम्नायदेवता-
विधानम् १३३
१. महामूर्तिमते पूर्वाम्नायदेवता-
कथनम् १३३
२. महामूर्तिमते दक्षिणाम्नाय-
देवताकथनम् १३३
३. महामूर्तिमते पश्चिमाम्नाय-
देवताकथनम् १३४
४. महामूर्तिमते उत्तराम्नाय-
देवताकथनम् १३४
५. महामूर्तिमते ऊर्ध्वाम्नाय-
देवताकथनम् १३४
६. महामूर्तिमते पातालाम्नाय-
देवताकथनम् १३४
महामूर्तिमते आम्नायस्य तन्त्र-
संख्याकथनम् १३५
१. पूर्वाम्नाये तन्त्रसंख्याकथनम् १३५
२. दक्षिणाम्नाये तन्त्रसंख्या
कथनम् १३५
समयाम्नायमते षडाम्नायस्य
तन्त्रसंख्याकथनम् १३६
६. पातालाम्नायकथनम् १३७
महानिष्कलदर्शनाम्नायकथनम् १३८
कादिमते दर्शनस्याभिधानम् १३९
दिव्याम्नायदेवताकथनम् १३९
(क) विद्याम्नायदेवताकथनम् १४०
कादिमते देवताकथनम् १४१
विद्याम्नायकथनम् १४१
(ख) सिद्धाम्नायकथनम् १४२
(ग) दिव्याम्नायकथनम् १४३
(घ) रत्नाम्नायविधानम् १४४
(ङ) देशागमाख्यतन्त्रकथनम् १४५
(च) मण्डलाम्नायकथनम् १४७
१. मण्डलाम्नाये पूर्वाम्नायदेवता-
विधानम् १४७
२. दक्षिणाम्नायदेवताकथनम् १४७
३. पश्चिमाम्नायदेवताकथनम् १४७
४. उत्तराम्नायदेवताकथनम् १४८
५. ऊर्ध्वाम्नायदेवताविधानम् १४८
६. पातालाम्नायदेवताकथनम् १४९
(छ) पञ्चकृत्याम्नायरूपकथनम् १४९

(ज) कालिकाम्नायपर्यायकथनम् १५०
(झ) पर्यायागमरूपकथनम् १५२
(ञ) बटुकाम्नायकथनम् १५३
(श्लोक संख्या १६६)

अष्टमः पटलः १५५-१८७
यन्त्रप्रस्तारादिनिर्णयकथनम्

निर्गुणब्रह्मकथनम् १५५
सगुणब्रह्मकथनम् १५५
महाशक्तिस्वरूपकथनम् १५६
महाशक्तिदर्शनकथनम् १५६
शक्तितः सृष्टिकथनम् १५६
महामत कथनम् १५७
उग्रतारानिरुक्तिकथनम् १५७
सम्प्रदायभेदेन विद्यानामकथनम् १५७
नाडीत्रितयरूपिणी शक्तिकथनम् १५९
ब्रह्मताराभ्यासकथनम् १६०
नादोत्पत्तिकथनम् १६०
परकायप्रवेशकथनम् १६१
ब्रह्मविद्यास्वरूपकथनम् १६१
१. पूर्वाम्नाये सृष्टिरूपमन्त्रयोग-कथनम् १६२
२. दक्षिणाम्नाये स्थितिरूपभक्ति-योगकथनम् १६२
३. पश्चिमाम्नाये संहाररूपकर्म-योगकथनम् १६२
४. उत्तराम्नाये मन्त्रषट्करूप ज्ञानयोगकथनम् १६३
५. ऊर्ध्वाम्नाये अनुग्रहरूप स्वाराज्ययोगकथनम् १६३
६. पातालाम्नाये त्रैलोक्योत्पत्तिरूप सम्भोगयोगकथनम् १६३
प्रकाशनयोग्याम्नायकथनम् १६४
पञ्चप्रेतावतारकथनम् १६४
धर्मसंस्थापनार्थ शङ्करावतारकथनम् १६५
दक्षिणामूर्तिरूप शिवावतारकथनम् १६५
सकलनिष्कलकथनम् १६५
दिव्यसाम्राज्यदीक्षाक्रमकथनम् १६६
१. पूर्वाम्नाये सृष्टिरूपमन्त्रयोग-कथनम् १६६
भोगवारसम्प्रदायकथनम् १६६
२. दक्षिणाम्नाये 'स्थिति'रूप भक्तियोगकथनम् १६६
३. पश्चिमाम्नाये 'संहार'रूप कर्मयोगकथनम् १६७
४. उत्तराम्नाये (मन्त्रषट्क रूप)ज्ञानयोगकथनम् १६८
५. ऊर्ध्वाम्नाये प्रकाशरूप अणिमाष्टकयोगवित्कथनम् १६८
दिव्यौघसम्प्रदायकथनम् १६९
ज्ञानकाण्डादि पञ्चकाण्डकथनम् १७०
ज्ञानयोगादि पञ्चयोगकथनम् १७०
भावक्रियाक्रमेण द्विधामन्त्रयोग-कथनम् १७०
सन्यासाश्रमकथनम् १७०
न्यासभेदकथनम् १७१
कलहट्टादि प्रदेशकथनम् १७१
दक्षिणामूर्तिसम्मत अवतार-परम्पराकथनम् १७१
निर्गुणाख्योपासनाविधानम् १७२
श्रीचक्रप्रस्तारभेदकथनम् १७२
पूजनाय प्रशस्तश्रीचक्ररचना-कथनम् १७३
दक्षिणामूर्तिसम्मत श्रीचक्ररचना-क्रमकथनम् १७४
आनन्दभैरवमते श्रीचक्रनिर्माण-कथनम् १७४
कादिप्रस्तारकथनम् १७५
भूप्रस्तारस्य भेदकथनम् १७६
बीजहीनयन्त्रस्य चैतन्यरहितत्व-कथनम् १७७
आनन्दभैरवमते प्रस्तारकथनम् १७८

दक्षिणामूर्तिमते भूप्रस्तारादि-कथनम् १७८
विरूपाक्षमते भूप्रस्तारादिकथनम् १७९
बटुकमते प्रस्तारतादात्म्यकथनम् १७९
कालीदेव्याः यन्त्रकथनम् १८०
प्रकारान्तरेण कालीयन्त्रकथनम् १८०
यन्त्रान्तरकथनम् १८१
श्रीदक्षिणकाल्या यन्त्रकथनम् १८१
मतभेदेन बीजानां निर्णयकथनम् १८२
बिन्दुस्वरूपकथनम् १८२
महाकालमते ध्यानकथनम् १८३
अतिकालमते ध्यानकथनम् १८३
तारायन्त्ररहस्यकथनम् १८३
श्रीमहातारिणीमनोः यन्त्रकथनम् १८४
श्रीतारिणीमनोः यन्त्रकथनम् १८४
गन्धर्वेशमते तारिणीमनोः यन्त्र-कथनम् १८५
पुंयोगर्थ विद्यासार्धं देवतापूजन-कथनम् १८६
महाविद्यासिद्धिकथनम् १८६
यक्षिणीसिद्धिकथनम् १८६

(श्लोक संख्या २१९)

नवमः पटलः १८८-२०२

मालाभेदनिरूपणम्

दैत्यसंहरणार्थाय कालीरूपकथनम् १८८
कालिकाविद्याभेदकथनम् १८९
कालिकांशाद् विद्योत्पत्तिकथनम् १८९
गणेशे द्वितयरूपकथनम् १८९
शिवशक्त्यात्मकब्रह्मनिरूपणम् १९०
हरिहरात्मकस्वरूपविधानम् १९१
अर्धनारीश्वरस्वरूपकथनम् १९१
गौरीलक्ष्म्योर्व्यत्ययकथनम् १९२
शिवरामात्मक ध्यानकथनम् १९२
पुरश्चरणकथनम् १९३
ध्यानशृङ्खलानिरूपणम् १९३
नाडीवायुप्रभेदेन कुण्डलिनी-गतिकथनम् १९४
विज्ञानप्राप्तिकथनम् १९५
विज्ञानस्य प्रथमभूमिका-कथनम् १९५
विज्ञानस्य मुख्यभूमिका-कथनम् १९५
मेधादीक्षाप्राप्तिकथनम् १९६
ब्रह्मरूपत्वकथनम् १९६
क्षुद्रानन्दकथनम् १९६
ब्रह्मानन्दकथनम् १९६
महाकुण्डलिनीस्वरूपकथनम् १९७
स्वयम्भूलिङ्गस्य स्वरूपकथनम् १९७
मूलाधारस्थानकथनम् १९७
चन्द्रसंज्ञककटाहकथनम् १९८
सप्तदशीकलाकथनम् १९८
मालाभेदकथनम् १९८
शक्तिमालाकथनम् १९९
वैष्णवीमालाकथनम् १९९
शिवामालाकथनम् १९९
गायत्रीमालाकथनम् १९९
वटुकाभिधामालाकथनम् १९९
चीनमालाकथनम् २००
क्षेत्रपालजा मालाकथनम् २००
गन्धर्वमालाकथनम् २००
वटवासिनीमालाकथनम् २००
मञ्जुघोषमालाकथनम् २००
खेचरीमालाकथनम् २००
शाम्भवीमालाकथनम् २००
वारुणीमालाकथनम् २०१
यक्षिणीमालाकथनम् २०१
किन्नरीमालाकथनम् २०१
जैनमालाकथनम् २०१
चान्द्रीमालाकथनम् २०१
आधिक्यायुधके व्यवस्थाकथनम् २०२

(श्लोक संख्या ९०)

दशमः पटलः २०३-२२३
सामान्यभाषाविवरणम्

शय्यायां गुरुचिन्तनकथनम् २०३
जपसमर्पणविधिकथनम् २०४
मालाभेदकथनम् २०४
'कुल्लुका' शब्दनिर्वचनकथनम् २०५
कुल्लुकाजपहीनसाधकस्य गति-कथनम् २०६
कुल्लुकादेव्या स्थानकथनम् २०६
अन्तर्मातृकाविधानम् २०६
१. केरल सम्प्रदाये न्यासकथनम् २०७
२. काश्मीरसम्प्रदाये न्यासविधि-कथनम् २०८
३. गौंडक्रमे न्यासकथनम् २०८
जपान्तिकविधिकथनम् २०८
वैष्णवाद्यागममतकथनम् २०९
भूतशुद्धिविधिकथनम् २०९
कुण्डल्युत्थापनमन्त्रविधानम् २०९
स्त्री-पुंभेदकथनम् २१०
षट्शाम्भवक्रमे कालिकासाधन-कथनम् २११
त्रिविधषट्कर्मनिरूपणम् २११
सिद्धिप्रत्ययकथनम् २१२
नित्यास्वरूपकथनम् २१३
तर्पणविधिकथनम् २१३
मार्गत्रयक्रमानुसारेण षडङ्गन्यास-कथनम् २१४
विधिरहितस्य हृदयादिन्यासस्य फलकथनम् २१५
सांख्यायनोक्त हृदयादिन्यास-मुद्राकथनम् २१६
पीठरहस्यकथनम् २१७
पीठद्वयकथनम् २१८
छिन्नायां यथायोगेन पीठकथनम् २१८
पूजोपचारविधानम् २१९
पीठचतुष्टयकथनम् २१९
विष्टरपदस्य विधिकथनम् २२०
सदाशिवरूप विष्टरकथनम् २२१
यत्रानुक्ता गायत्री तत्क्रमकथनम् २२२
(श्लोक संख्या १३४)

एकादशः पटलः २२४-२४०
पुष्प-होम-ब्रह्मजात्यादिनिरूपणम्

स्त्रीदीक्षाविधिकथनम् २२४
स्त्रीणां मार्गकथनम् २२५
सर्वकामदादीक्षाकथनम् २२५
पुष्पभेदाहुतिकथनम् २२६
पर्युषितपुष्पकथनम् २२७
नारद(पाञ्चरात्र)मते विशेषकथनम् २२८
महत्तरहोमकथनम् २२९
विषमाख्यक्रमेण होमकथनम् २३१
दशविधपञ्चामृतकथनम् २३२
विषमाख्यं होमकर्मकथनम् २३२
सप्तशत्यां होमविधानम् २३३
अन्तःपूजाश्रेष्ठत्वकथनम् २३४
भावयोगीनिरूपणम् २३७
शाबरसाधनकालकथनम् २३७
भाषासाधनकालकथनम् २३७
१. नपुंसाष्टककथनम् २३८
२. वन्ध्याष्टककथनम् २३८
३. अपस्माराष्टककथनम् २३९

(श्लोक संख्या १०६)

श्लोकार्धानुक्रमणिका २४१

परिशिष्ट-१
शब्दपूर्तिः २८५

परिशिष्ट-२
पारिभाषिककोशः २८७
परिशिष्ट-३
देवी देवताओं के प्राकट्य का दिन २९१
परिशिष्ट-४
छिन्नमस्ता खण्ड के अनुसार शैव-वैष्णवादि तन्त्रों की संख्या २९३
परिशिष्ट-५
सम्मोहन तन्त्र के अनुसार तन्त्रों की संख्या २९५
परिशिष्ट-६
सम्मोहन तन्त्र में देशभेद के अनुसार तन्त्रों की संख्या २९६
परिशिष्ट-७
छिन्नमस्ता खण्ड के अनुसार देशपर्याय भेद से तन्त्रों की संख्या २९६
परिशिष्ट-८
शक्तिसङ्गमे समागतानि ग्रन्थ नामानि २९७
परिशिष्ट-९
शक्तिसङ्गमे समागतानि तान्त्रिक मतमतान्तराणि २९९
परिशिष्ट-१०
शक्तिसङ्गमे संदृष्टा विशिष्टाः शब्दा विषयाश्च ३०४

...✿...